Estd. in 2008
''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ''

Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur

NAAC Accredited | UGC Approved | Recognized by Statutory Councils

''शिवानी के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन''

हिन्दी विषय में

पी.एचडी. उपाधि हेतु

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

प्रस्तुतकर्त्री

जेवीएन सविता

एनरोलमेंट नंबर : JVR-I/24/13168

शोध निर्देशक

जेवीएन डॉ रामकृष्ण शर्मा

FACULTY OF EDUCATION & METHODOLOGY

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

2023-24

शोध शीर्षक

शिवानी के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

शोध प्रस्तावना

साहित्य को समाज का प्रतिबिंब माना जाता है। मनुष्य का सामाजिक जगत, उस जगत के प्रति उसकी अनुकूलता तथा उसे बदलने की इच्छा साहित्य में अभिव्यक्त होती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते जिज्ञासु प्रवृत्ति का भी होता है, वह जीवन जगत को जानने की इच्छा रखता है तथा साहित्य मानवीय संवेदनाओं के चिंतन और चित्रण की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति है। मानव जीवन को विभिन्न पहलुओं, कमियों तथा विशेषताओं के साथ उद्‌घाटित करना साहित्य का लक्ष्य है। उपन्यास औद्योगिक समाज की प्रमुख साहित्यिक विधा है। इसमें मनुष्य का जीवन, परिवार, राजनीति एवं शासन के साथ संबंधों का उद्‌घाटन तथा सामाजिक जगत के पुनःनिर्माण के प्रयास दृष्टिगत होते हैं। उपन्यास उन्हीं समस्याओं से रूबरू होता है जिनसे समाजशास्त्र। लेकिन उपन्यास वस्तु वर्णन के साथ मनुष्य के आंतरिक सत्यों तथा मानवीय चरित्रों को भी उजागर करता है।

विद्यार्थी जीवन से ही मुझे हिंदी कथा साहित्य में विशेष रुचि रही। मैंने कई लेखक-लेखिकाओं की कहानियाँ पढ़ीं। 12वीं कक्षा में मैंने प्रेमचंद का उपन्यास 'निर्मला' पढ़ा। उसके बाद कहानियों के साथ-साथ उपन्यास पढ़ने में भी मेरी विशेष रुचि होने लगी। कॉलेज के समय से अब तक मैंने कई कहानी और उपन्यास पढ़े। जिनमें प्रेमचंद के उपन्यास सर्वाधिक रहे। इस तरह हिंदी साहित्य से मेरा गहरा संबंध होता गया। मुझे जब शिवानी का 'कालिंदी' उपन्यास पढ़ने का अवसर मिला तो कालिंदी के चरित्र की जीवंतता ने मुझे बहुत प्रभावित किया इसके बाद शिवानी के उपन्यास साहित्य को पढ़ने के लिए मुझ में

जिज्ञासा उत्पन्न हुई और मैंने उनके कई उपन्यास पढ़े तथा शिवानी के उपन्यासों में समाज में व्याप्त विडंबनाओं, दांपत्य जीवन के बिखरते-जुड़ते संबंधों तथा जीवन में संघर्ष करती नारी पात्रों ने मुझे शिवानी के उपन्यासों पर अनुसंधान करने के लिए प्रेरित किया।

लेखिका 'गौरापंत शिवानी' स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य की लोकप्रिय लेखिका रही। शिवानी ने अपने उपन्यासों में पुरुष एवं नारी को कई स्तरों पर प्रस्तुत किया। उन्होंने उच्च वर्ग, मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग के व्यक्ति की छटपटाहट, अकेलापन, कुंठा, यातनाएं, वेदनाएं, सूक्ष्मता से प्रस्तुत की हैं। उन्होंने स्त्री पुरुष संबंधों को आधुनिकता की दृष्टि से देखा तथा विभिन्न सामाजिक समस्याओं को अपने उपन्यासों के माध्यम से अंकित किया है। उनके उपन्यासों ने सामाजिक समस्याओं जैसे- वैवाहिक समस्याओं अंतर्जातीय विवाह, अनमेल विवाह, प्रेम विवाह, बहुपत्नित्व, अविवाहित नारी, विधवा, वैश्या, नारी का हिंसक रूप, अवैध मातृत्व, पारिवारिक समस्या, धार्मिक समस्याओं, वर्तमान के साधु संत, अंधविश्वास आदि की समस्याओं को उदघाटित करने का प्रयास किया है। मानवीय पीड़ा और संघर्ष के यथार्थ को उद्घाटित करते हुए शिवानी के उपन्यासों से प्रभावित होकर मैंने ''शिवानी के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' मेरे शोध कार्य का विषय बनाया है। यह शोध कार्य आठ अध्यायों में विभक्त किया जायेगा। इन अध्यायों की संक्षिप्ती इस प्रकार है-

- प्रथम अध्याय शीर्षक है- '**समाज, समाजशास्त्र तथा उपन्यास का अर्थ परिभाषा और स्वरूप**'। इस अध्याय में समाज, समाजशास्त्र तथा उपन्यास के अर्थ और स्वरूप को समग्रता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

- द्वितीय अध्याय का शीर्षक है- **'शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'**। इस अध्याय में शिवानी के व्यक्तित्व तथा उनके रचना संसार का वर्णन किया जाएगा
- तृतीय अध्याय का शीर्षक है– **'शोध साहित्य की समीक्षा'**। इस अध्याय में शोध विषय से संबंधित पहले से प्रकाशित पुस्तकों का विश्लेषण किया जाएगा।
- चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है- **'शिवानी के उपन्यास साहित्य में समाज'**। इस अध्याय में शिवानी के उपन्यासों में प्रस्तुत समाज के विभिन्न पक्षों का वर्णन किया जाएगा जाएगा।
- पंचम अध्याय का शीर्षक है- **'शिवानी के उपन्यास साहित्य में धार्मिक और सांस्कृतिक स्थिति'**। इस अध्याय में शिवानी के उपन्यास साहित्य में धार्मिक और सांस्कृतिक स्थितियों के विभिन्न पक्षों का वर्णन किया जाएगा।
- षष्ठ अध्याय का शीर्षक है- **'शिवानी के उपन्यासों में आर्थिक स्थिति'**। इस अध्याय में शिवानी के उपन्यासों में समाज की आर्थिक स्थिति के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया जाएगा।
- सप्तम अध्याय का शीर्षक है– **'शोध के परिणाम एवं शोध पर विचार विमर्श'**। इस अध्याय में शोध के परिणामों का विवेचन और शोध कार्य पर विचार विमर्श किया जाएगा।
- अष्टम अध्याय का शीर्षक है- **'शोध का सारांश एवं निष्कर्ष'**। इस अध्याय में शोध का सारांश तथा निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

शोध का उद्देश्य

भारतीय समाज की जटिलताओं और गतिशीलता को समझने के लिए शिवानी के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय दृष्टि को समझना आवश्यक है।

- शिवानी के उपन्यासों के समाजशास्त्रीय तत्वों की पहचान कर भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों तथा समस्याओं के समाधान खोजना।
- शिवानी के उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक मूल्यों, जातिगत संरचनाओं, परंपराओं और आधुनिकता के द्वंदका अध्ययन तथा उनके साहित्य की आधुनिक युग में प्रासंगिकताका विवेचन करना।
- शिवानी के साहित्य में स्त्री चेतना के विविध पक्षों का विश्लेषण।
- शिवानी के प्रेरक व्यक्तित्व तथा विविधता पूर्ण रचना संसार पर प्रकाश डालते हुए उनका समकालीन महिला रचनाकारों से तुलनात्मक अध्ययन करना□

शोध प्रविधि

- इस शोध प्रबंध के लिए अध्ययन, अनुसंधान आदि प्रविधियों के द्वारा नवीन तथ्यों को उजागर करने का प्रयास किया जाएगा।
- इस शोध कार्य को वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए क्रमबद्ध रूप से पूर्ण कर लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाएगा।
- प्रस्तावित शोध कार्य के अंतर्गत शिवानी के उपन्यासों का संकलन कर सूक्ष्मता से अध्ययन और समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया जाएगा।
- इस विषय से संबंधित प्रकाशित संदर्भ-ग्रंथ, शोध-ग्रंथ, संदर्भ-पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं आलेख आदि सामग्री एकत्र कर उसका चिंतन एवं मनन किया जाएगा।
- मेरेइस शोध कार्य में यथा संभव एवम्पूर्वाग्रहरहित तथा तटस्थता पूर्वक विश्लेषण किया जाएगा।

पूर्ववर्ती शोध

मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध विषय 'शिवानी के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन' विषय की गहनता, गंभीरता और व्यापकता के साथ–साथ मौलिक एवं नवीनता लिए हुए होगा। अभी तक इस विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। शोध कार्य तत्वों पर आधारित वैज्ञानिक प्रक्रिया है। शिवानी का साहित्य

हिंदी साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उनके साहित्य पर लिखे गए शोध ग्रंथ हैं: “शिवानी की कहानियों में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध एक अनुशीलन”- राजबाला, "शिवानी का कहानी साहित्य: कथा एवं शिल्प” देशमुख, संजीवनी सुरेश।

शोध साहित्य की समीक्षा

कई समीक्षकों और रचनाकारों ने शिवानी के साहित्य को परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करने वाला बताया है तथा उनके अनुसार शिवानी के लेखन में मुख्य रूप से नारी चरित्र की सशक्त उपस्थिति और समाज में उनकी भूमिका का वर्णनमिलता है।

- **'शिवानी के उपन्यासों में चित्रित समसामयिक समस्याएं'** -डॉ अंजीर भील।

इस पुस्तक में लेखिका ने शिवानी के जीवन और व्यक्तित्व से लेकर उपन्यासों के कथ्य एवं चिंतन पक्ष पर सूक्ष्मता से प्रकाश डाला है। इस ग्रंथ में शिवानी के समस्त रचना संसार तथा संपादन के क्षेत्र एवं समाज से संबंधित विविध विषयों कोव्यापक रूप से उजागर किया है तथा उनके उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक, सामाजिक समस्याओं, नारी संबंधी समस्याओं का उद्घाटन किया गया है।

- **'शिवानी की कथा साहित्य में नारी चित्रण'** - शिवानी पांडेय।

इस ग्रंथ में लेखिका के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का वर्णन किया गया है। उनके प्रेरणा बिंदु तथा उनके व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पक्षों पर प्रकाश डाला गया है जिनका प्रभाव उनकी रचनाओं में उद्घाटित होता हैं। इसमें हिंदी साहित्य में वर्णित नारी की स्थिति, शिवानी के कथा साहित्य में नारी चित्रण, शिवानी की विचारधारा और कथा साहित्य में नारी चरित्र की दृष्टि से शिवानी के प्रदेय पर दृष्टिपात किया गया है।

- **'शिवानी की कथा साहित्य में सौंदर्य बोध'** -डॉ सविता।

यह ग्रंथ शिवानी के कथा साहित्य में अंतर्निहित विषय वस्तु, भाव संपदा एवं शिल्प विधान के मूर्त- अमूर्त तत्वों का प्रकृति विवेचन करता है। यह शिवानी के अवदान को और भी अधिक ग्राहय और उपादेयी बनाता है। शिवानी के कथा साहित्य से अवगत कराया गया है तथा मूल संवेदना से जोड़ने का प्रयास किया गया है। इस ग्रंथ में पारिवारिक संबंधों में प्रेम कथाओं का वर्णन, उनमें आने वाली समस्याओं का वर्णन किया गया है तथा सौंदर्य और जीवन दृष्टि का अवलोकन किया गया।

- **'शिवानी के उपन्यासों में नारी विमर्श'** - कृष्णाजून।

इस ग्रंथ में शिवानी के जीवन वृत्त का आकलन कर, उनके जीवन दर्शन को रूपायित गया किया है तथा उनके उपन्यासकार रूप में कृतित्व की प्रस्तुति तथा रचनाक्रम का वर्णन कर उनका साहित्य में स्थान लक्षित किया गया है। इस ग्रंथ में शिवानी के उपन्यासों की नारी चेतना के विभिन्न पक्षों को विभिन्न स्थितियों में उद्घाटित किया गया है।

इन समीक्षा से स्पष्ट होता है कि शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना, समाजशास्त्रीय संरचना, पारिवारिक ताने–बाने और जाति व्यवस्था जैसे विषयों को सूक्ष्मता से उद्घाटित किया गया है। यह शोध पूर्ववर्ती समीक्षाओं का विश्लेषण कर एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करेगा।

विषय सूची

प्रथम अध्याय:समाज, समाजशास्त्र और उपन्यास का अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

1.1 समाज: अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.2 समाजशास्त्र: अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.3 साहित्य में समाज शास्त्रीयअध्ययन के प्रतिमान

1.4 उपन्यास का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.5 हिंदी साहित्य में उपन्यास का उद्भव और विकास

1.6 उपन्यास का समाज शास्त्रीय अध्ययन

1.7 उपन्यास के समाजशास्त्रीय अध्ययन के मुख्य क्षेत्र:

1.7.1 सामाजिक व्यवस्था राजनैतिक स्थिति
1.7.2 धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति
1.7.3 आर्थिक स्थिति
1.7.4 नैतिक स्थिति
1.7.5 मनोवैज्ञानिक विश्लेषण
1.7.6 ग्रामीण एवं नगरीय व्यवस्था

द्वितीय अध्याय: शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.1 व्यक्तित्व का अर्थ

2.2 शिवानी का व्यक्तित्व

2.3 जीवन परिचय

2.3.1 जन्म-स्थान, जन्म-तिथि एवं मृत्यु
2.3.2 बचपन,परिवार एवं शिक्षा-दीक्षा
2.3.3 साहित्य-सृजन का प्रेरणा-स्रोत

2.4 शिवानी का बहुआयामी व्यक्तित्व

2.4.1 बहुभाषाविद शिवानी
2.4.2 नारी मन की अद्‌भुत चितेरी
2.4.3 संस्कृति की बहुरंगी प्रतिभा
2.4.4 लेखकीय ईमानदारी
2.4.5 साहित्य संस्थाओं से संबंध
2.4.6 दूरदर्शन एवं आकाशवाणी का जीवन
2.4.7 पुरस्कार एवं उपाधियां

2.5 शिवानी का रचना संसार

2.5.1 लेखन-कार्य एवं प्रथम कृति
2.5.2 कहानीकार शिवानी
2.5.3 निबंधकार शिवानी
2.5.4 संस्मरण एवं रेखा चित्रकार शिवानी
2.5.5 रिपोतार्ज लेखिका शिवानी

2.5.6 यात्रा-विवरण लेखिका शिवानी
2.5.7 इतिहासकार शिवानी
2.5.8 उपन्यासकार शिवानी
2.5.8.1 बृहद उपन्यास
2.5.8.1 लघुउपन्यास

2.6 शिवानी के उपन्यासों का परिचयात्मक अध्ययन

2.6.1 सुरंगमा
2.6.2 कालिंदी
2.6.3 कृष्णकली
2.6.4 चौदह फेरे
2.6.5 रतिविलाप
2.6.6 भैरवी
2.6.7 मायापुरी
2.6.8 अतिथि
2.6.9 श्मशान चंपा
2.6.10 पूतोंवाली
2.6.11 गैंडा
2.6.12 किशनुली
2.6.13 करिएछिमा
2.6.14 कस्तूरी मृग
2.6.15 चल खुसरो घर आपने
2.6.16 विवर्त्त
2.6.17 कृष्णवेणी
2.6.18 विषकन्या
2.6.19 माणिक
2.6.20 कैंजा
2.6.21 रथ्या
2.6.22 तीसरा बेटा
2.6.23 बदला
2.6.24 अभिनय
2.6.25 मोहब्बत
2.6.26 पाथेय
2.6.27 चाँचरी

तृतीय अध्यायः शोध साहित्य की समीक्षा

3.1 शिवानी के साहित्य पर पूर्ववर्ती शोध

3.2 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से किए गए अध्ययन

3.3 स्त्रीविमर्श, जातिवर्ग, परिवार, परम्परा आदि पर उपलब्ध साहित्य

3.4 पूर्ववर्ती शोधों की सीमाएं

चतुर्थ अध्याय: शिवानी के उपन्यास साहित्य में समाज

4.1 सामाजिक संरचना एवं समस्याएँ:

4.1.1 संयुक्त एवं एकांकी परिवार
4.1.2 मानवीय संत्रास का चित्रण
4.1.3 नगरीय और ग्रामीण जीवन
4.1.4 दांपत्य जीवन की समस्या
4.1.5 वृद्ध जनों की समस्या

4.2 वैवाहिक समस्या

4.2.1 दहेज-प्रथा
4.2.2 बाल-विवाह
4.2.3 बहु-विवाह
4.2.4 अनमेल-विवाह
4.2.5 प्रेम-विवाह
4.2.6 अंतरजातीय-विवाह
4.2.7 विवाह-विच्छेद

4.3 नारीरूप: एक समस्या

4.3.1 वैश्या समस्या
4.3.2 विधवा समस्या
4.3.3 अवैध मातृत्व की समस्या
4.3.4 दहेज की समस्या
4.3.5 कामकाजी महिलाएं एवं भ्रूण-हत्या की समस्या
4.3.6 नारी का हिंसक रूप
4.3.7 पुरुष की मानसिकता

4.4 वैवाहिक समस्या:

4.4.1 अंतर्जातीय विवाह
4.4.2 प्रेम विवाह
4.4.3 अनमेल विवाह
4.4.4 बहुपत्नीत्व की समस्या
4.4.5 अविवाहित नारी की समस्या

पंचम अध्याय: शिवानी के उपन्यास साहित्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति

5.1 धर्म: अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप

5.2 धर्म: समाज और संस्कृति

5.3 अंधविश्वास की समस्या

5.4 जातिवाद

5.5 वर्तमान में साधु संत

5.6 पारंपरिक संस्कार

5.7 मूल्यबोध:

5.7.1 वीरता
5.7.2 त्याग
5.7.3 सद्भावना
5.7.4 कर्म-मूल्य
5.7.5 भाग्यवादी-आस्था वादी
5.7.6 अहिंसा

षष्ठ अध्याय: शिवानी के उपन्यासों में आर्थिक स्थिति

6.1 अर्थ की परिभाषा एवं स्वरूप

6.2 देश की बढ़ती आबादी और आर्थिक समस्या

6.3 अर्थ के कारण पारिवारिक संबंधों में बिखराव

6.4 बढ़ती बेरोजगारी एवं भ्रष्टाचार की समस्या

6.5 आर्थिक आधार पर समाज के वर्ग

6.6 आर्थिक विषमता एवं विपन्नता

सप्तम अध्याय: शोध के परिणाम एवं शोध पर विचार विमर्श

7.1 शोध की उपलब्धियां

7.2 शोध की सीमाएं

अष्टम अध्याय: शोध का सारांश एवं निष्कर्ष

उपसंहार

शोध प्रबंध के अंतिम चरण उपसंहार में समस्त अध्यायों का निष्कर्ष एवं मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाएगा।

इस शोध प्रबंध के अनुसंधान कार्य पूरा करने में जिन पुस्तकों की सहायता ली जाएगी। उनकी सूची नीचे दी गई है।

संदर्भ ग्रंथ

आधार ग्रंथ-

1. 'सुरंगमा' - राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली-110051, प्रथम संस्करण 2006, दसवां संस्करण 2023
2. 'कालिंदी' - राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली-110051, प्रथम संस्करण 2006, दसवां संस्करण 2022
3. 'कृष्णकली' - राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली- 110051 प्रथम संस्करण- 2006, पांचवाँ संस्करण- 2024
4. 'चौदह फेरे' - राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली-110051, प्रथम संस्करण 2006, पंद्रहवां संस्करण 2024
5. 'रतिविलाप' - राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली-110051, प्रथम संस्करण 2006,दसवां संस्करण 2023
6. 'भैरवी' -राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली- 110051, प्रथम संस्करण 2007
7. 'मायापुरी' - राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली- 110051, प्रथम संस्करण 2006, 11वां संस्करण 2023
8. 'अतिथि' -राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली- 110051, दसवां संस्करण 2020, पहला संस्करण 2006
9. 'श्मशानचंपा' - राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली-110051, पहला संस्करण 2006, 11वांसंस्करण 2021
10. 'पूतोंवाली' - राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली-110051, पहला संस्करण 2006, दसवां संस्करण 2023
11. 'गैंडा' - सरस्वती विहार जी.टी. रोड शाहदरा, दिल्ली 110032, तृतीय संस्करण 1986
12. 'किशनुली' - सरस्वती विहार जी.टी. रोड शाहदरा, दिल्ली 110032, द्वितीय संस्करण 1980

13. 'चल खुसरो घर आपने' – राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली– 110051, चौथा संस्करण 2019
14. 'महोब्बत'- राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली– 110051, प्रथम संस्करण 2006, दसवाँ संस्करण 2023
15. 'करिएछिमा' – राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली– 110051, पहला संस्करण 2007
16. 'बदला' - 'स्वयंसिद्धा' – राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली– 110051, पहला संस्करण 2007, सातवाँ संस्करण 2023
17. 'अभिनय'- 'स्वयंसिद्धा' – राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली– 110051, पहला संस्करण 2007, सातवाँ संस्करण 2023
18. 'कस्तूरीमृग' – राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी 17, जगतपुरी, दिल्ली– 110051, चौथा संस्करण 2019
19. 'विवर्त्त' – राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली 110006, प्रथम संस्करण 1984
20. 'रथ्या' – शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा, दिल्ली 110032, पहला संस्करण 1976
21. 'कृष्णवेणी' – हिंदी पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाद गार्डन, जीटी रोड दिल्ली 110095, नवीन संस्करण 1998
22. 'विषकन्या' – हिंदी पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाद गार्डन, जीटी रोड दिल्ली 110095, तीसरा संस्करण 1972
23. 'माणिक' – सरस्वती विहार 21, दरियागंज नईदिल्ली 110002, दयानंद मार्ग, प्रथम संस्करण 1977
24. 'कैंजा' – राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973
25. 'तीसरा बेटा'-विवर्त्त- राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली 110006, प्रथम संस्करण 1984
26. 'पाथेय'- राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2007, पहले आवृत्ति 2008
27. 'चाँचरी'- राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, पहला संस्करण 2007, पहले आवृत्ति 2008

सहायक ग्रन्थ-

1. कुलकर्णी रेवा-'हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी' चंद्रलोक प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण- 1994
2. खोटसिद्धाम-'शिवानी के उपन्यासों में समाज' रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता, सफेद कॉलोनी, जूही, कानपुर प्रथम संस्करण-2009
3. गर्ग नीलम मैगजीन- 'साठोत्तरी हिंदी उपन्यास में नारी' सार्थक प्रकाशन, गौतम नगर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1999
4. देसाई पारूकांत- 'हिंदी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास' चिंतन प्रकाशन, आवास विकास, हंसपुरम, कानपुर प्रथम संस्करण-2002

5. बेचन- 'आधुनिक हिंदी उपन्यास: उद्भव और विकास' सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1985
6. मदान इंद्रनाथ- 'आधुनिकता और हिंदी उपन्यास' (1934-36 से 1979 तक) राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली 1980
7. वर्मा शील प्रभा- 'महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ' विद्या विहार प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 1987
8. शर्मा ज्योत्सना- 'शिवानी का हिंदी साहित्य: सामाजिक परिप्रेक्ष्य में' अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-1994
9. शुक्ल रामलन- 'हिंदी उपन्यास कला' सन्मार्ग प्रकाशन, बेंगलुरु रोड, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1972
10. विश्वंभर दयाल गुप्त- 'साहित्य का समाजशास्त्र अवधारणा सिद्धांत एवं पद्धति' सीता प्रकाशन, मोती बाजार, हाथरस, प्रथम संस्करण 1982
11. मैनेजर पांडे- 'साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1989
12. सच्चिदानंद सिन्हा- 'संस्कृति विमर्श' वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, प्रथम संस्करण-2007
13. कु. शशि बाला पंजाबी- 'शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान' देव नगर प्रकाशन, जयपुर, संस्करण-1993
14. उषा यादव- 'हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना' राधाकृष्ण प्रकाशन - 1999
15. राजेंद्र यादव- 'उपन्यास स्वरूप और संवेदना' वाणी प्रकाशन, दिल्ली 1997
16. डॉक्टर ज्योत्सना शर्मा- 'शिवानी का हिंदी साहित्य- सामाजिक परिप्रेक्ष्य में' अन्नपूर्णा प्रकाशन, दिल्ली 1994
17. डॉक्टर हंसा ए. सोलंकी 'शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना'
18. डॉक्टर पंकज वीरपाल- 'शिवानी के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प'
19. डॉ अल्का मिश्रा- 'शिवानी के उपन्यास और पूर्वांचलीयलोक संस्कृति'
20. कृष्ण जून- 'शिवानी के उपन्यासों में नारी विमर्श', संजय प्रकाशन
21. डॉ. सविता- 'शिवानी की कथा साहित्य में सौंदर्य बोध', नमन प्रकाशन
22. डॉ अंजीर भील- 'शिवानी के उपन्यासों में चित्रित समसामयिक समस्याएं', विकास प्रकाशन, कानपुर
23. शिवानी पांडेय- 'शिवानी की कथा साहित्य में नारी चित्रण' ओमेगा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली 110002